संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२८ ● : संयुक्तांक ५१-५२ ● २१ एवं २८ दिसम्बर, २०२३ (गुरुवार) पौष कृष्णपक्ष द्वितीया सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२४

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय राजनीति के शिखर पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी

–देवेन्द्रपाल वर्मा

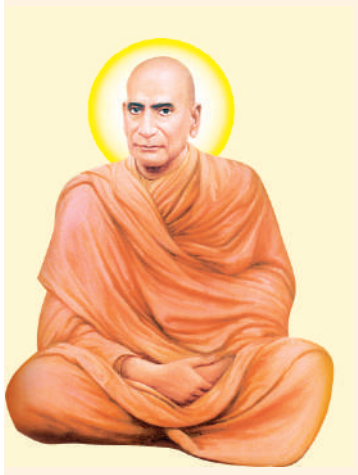

स्वामी श्रद्धानन्द क्रियात्मक राजनीति से अलग हटकर कार्य करने के इच्छुक थे। परन्तु सन् १६१६ की शुरूआत में महात्मा गाँधी से मिलने के पश्चात् गाँधी जी के सत्याग्रह में पूर्ण सहयोग करने का निश्चय किया। जिसके फलस्वरूप २३ मार्च, १६१६ को अंग्रेजों के काले कानून रॉलेट एक्ट के खिलाफ दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द जी की अध्यक्षता में विशाल जन सभा का आयोजन किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी इस सत्याग्रह के पहले सिपाही व विराट व्यक्तित्व के धनी प्रथम मार्ग दर्शक के रूप में सामने आये।

इस जनसभा में यह तय किया गया, ३० मार्च के दिन पूरे भारत वर्ष में इसे प्रार्थना दिवस के रूप में मनाया जाये, आम हड़ताल में सभी लोग उपवास रखेंगे तथा देशहित में ईश्वर से प्रार्थना की जाये। फलस्वरूप हिन्दू, मुसलमान, सिख, जैनी आदि सभी ने अपने व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को बन्द कर पूर्ण एक जुट होकर इस सत्याग्रह में शामिल हुए।

दोपहर स्वामी श्रद्धानन्द जी की अध्यक्षता में पीपल पार्क में विराट जन सभा का आयोजन किया गया। अंग्रेजी शासन के कान खड़े हो गये। पुलिस अधिकारियों को टोह लेने के लिए सक्रिय कर दिया गया। गुप्तचरों व पुलिस अधिकारियों को स्वामी ने कहा कि "हम शान्ति पूर्वक सत्याग्रह करेंगे। लोगों को भड़काना हमारा काम नहीं"।

सभा की समाप्ति पर २०-२५ हजार जनसमूह का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द करते हुए घन्टाघर पर पहुँच गये। गोरखा सिपाही भीड़ पर संगीनें तान कर खड़े हो गये। तभी स्वामी जी निडरतापूर्वक अपना सीना आगे कर कहा मार दो। तभी एक अधिकारी तीव्र गति से घोड़े पर आकर सिपाहियों को पीछे हटने का आदेश देता है। जुलूस विजय पथ पर अद्भुत गाथा लिखता हुआ उस विराट पुरुष के साथ चल दिया।

अप्रैल, १६१६ को जलियाँ-वाला बाग, अमृतसर के हत्याकाण्ड एवं पूरे पंजाब में लगी फौजी बन्दिशों के कारण जनमानस काफी आतंकित व भयभीत था। देश के मुख्य-मुख्य नेतागण सलाखों के पीछे थे। ऐसे कठिन समय में कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का उत्तरदायित्व स्वामी श्रद्धानन्द को सौंपा गया। अधिवेशन के स्वागत भाषण में वेद मंत्रों का पाठ करते हुए उन्होंने हिन्दी में कहा कि "यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं में सदाचार का आधार रखो। जब ब्रह्मचारी, शिक्षक सदाचारी होंगे, शिक्षा पद्धति सद-आचरण युक्त होगी तभी जाति को उत्थान करने वाले राष्ट्रभक्त नवयुवक पैदा होंगे। अन्यथा हमारी सन्तानें विदेशी विचारों व सभ्यता के गुलाम बने रहेंगे। स्वामी जी का मानना था कि मनुष्य की बुराइयाँ ही उसके वास्तविक शत्रु हैं। राजनीतिक अधिकारों का हल्ला मचाने वाले यदि चरित्रहीन होंगे तो देश को रसातल में ले जायेंगे। देश की स्वाधीनता, अखण्डता, राष्ट्रीयता में स्वामी श्रद्धानन्द जी का अटूट विश्वास था। मानव मात्र की सेवा करते हुए अन्त में देश व समाज के हित हेतु बलिदान देकर अमर हो गये।

वेदामृतम्

अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशाः, अग्निर्ऋषि यः सहस्रा सनोति।
अग्निर्दिवि हव्यमाततान, अग्नेर्धामानि बिभृता पुरुत्रा।।

आओ भाइयों! 'अग्नि' का महिमा-गान करें, अग्नि-तुल्य ज्योतिर्मय प्रभु के महिमा-मय गुणों एवं कार्यों का वर्णन करें। वह प्रभु 'वीरपेशाः' है, बीर स्वरूपवाला है। वीर उसे कहते हैं जो विशेषरूप से शत्रुओं को प्रकंपित करने वाला एवं विक्रमशील हो। प्रभु हमारे समस्त बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओं को प्रकम्पित करता है। अतएव महान् विक्रमी है। वह हमें 'द्रविण' देता है, सर्वविध धन-धान्यादि ऐश्वर्य एवं बल प्रदान करता है। यह अभिमान मत करो कि कृषि, व्यापार आदि से धन का उपार्जन तथा व्यायाम, पौष्टिक भोजन आदि से बल का उपार्जन तो हम स्वयं करते हैं। जिस धन का अर्जयिता तुम स्वयं को समझ रहे हो, उसे प्रभु ने पहले ही प्रकृति में बखेरा हुआ है, और जिस बल का संचय-कर्ता तुम स्वयं को मान रहे हो, वह बल संकट के समय निस्तेज हो जाता है, यदि प्रभु मनों में बल का संचार न करें तो।

अग्नि प्रभु हमें ऐसे युग-निर्माता ऋषि प्रदान करता है, जो अपनी आध्यात्मिक धाराओं से समस्त विश्व को आप्लावित कर देते हैं, जो अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सब-कुछ हस्तामलकवत् साक्षात् कर लेते हैं और संसार का मार्ग-दर्शन करते हैं और सहस्रों ज्ञान प्रदान करते हैं। अग्नि प्रभु का यह चमत्कार भी देखो कि वह आकाश में मेष-रूप जल को विस्तीर्ण करता है। नियमित रूप से सागर, नदी-सरोवर आदि का जल सूर्य के ताप से वाष्प बनकर ऊपर पहुंच मेधाकार हो जाता है, और वह वृष्टि के रुप में पुनः हमे प्राप्त हो जाता है. यह सब उस प्रभु की लीला सचमुच अपरम्पार है। साथियो! देखो, अग्नि प्रभु के धाम सर्वत्र स्थित है। वह किसी एक धाम में नहीं रहता, किन्तु ब्रह्माण्ड के सभी धामों में उसका निवास है। उसके तेजस्वी धाम भी सर्वत्र विद्यमान है। आओ, उस प्रभु से हम प्रार्थना करें, उसकी बन्दना करें, और उसके उपकारों का स्मरण करते हुए उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें।

ईश्वर के प्रथम शास्त्रोक्त परिभाषक, सामाजिक वितण्डावाद व पाखण्ड के विरूद्ध सचेतक एवं वैदिक उद्घोषक, महर्षि दयानन्द सरस्वती

–देवेन्द्रपाल वर्मा

"राष्ट्र की स्वतंत्रता की नींव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने रखी" –मनोज सिन्हा

महर्षि के वैदिक निनाद को संसार में फैलाने के संकल्प के साथ समाप्त हुआ आर्य समाज गाजीपुर का उत्सव

आर्य समाज गाजीपुर के १२१वें वार्षिकोत्सव के समापन के अवसर पर दिनांक २४ दिसम्बर, २०२३ को उपस्थित आर्य बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने कहा कि "महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले ऐसे दिव्य विचारक हुए हैं जिन्होंने शास्त्र सम्मत ईश्वर की परिभाषा अपने ग्रन्थों आर्योद्देश्य रत्नमाला, स्वमन्तव्य प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश एवं आर्य समाज के दूसरे नियम में लिखी है। महर्षि ने समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं वितण्डावाद को समूल नष्ट करने के लिए जन मानस को झकझोर कर जगाया। लुप्त हो चुके वेद ज्ञान को सर्व साधरण को उपलब्ध कराया। इसके लिए उन्होंने सन् १८७५ को मुम्बई में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। महर्षि की २००वीं जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर मैं सभी आर्य बन्धुओं का आवाहन इस संकल्प के साथ करता हूँ कि देव दयानन्द के उद्देश्य को पूरा किये बिना हम चैन से नहीं बैठेंगे। आज समय की मांग व समाज की दशा को देखते हुए महर्षि के सिद्धान्तों की महती आवश्यकता है।

समारोह के मुख्य अतिथि जम्मू कश्मीर के राज्यपाल महामहिम श्री मनोज सिन्हा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की स्वतंत्रता की नींव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही सर्व प्रथम रखी थी। उन्हीं के रणबांकुरों ने इस राष्ट्र को आजाद कराया था। महर्षि की २००वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर हमें व्रत लेना होगा कि वेदों का प्रचार व राष्ट्र रक्षा में सदैव तत्पर रहेंगे।

कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वतीजन व विशिष्ट अतिथि आचार्य शुचिशदमुनि, श्री आचार्य योगेश भारद्वाज जी, आचार्य सत्यपाल जी, आचार्या नन्दिता शास्त्री जी, पंडित नेमू प्रकाश जी, नयन श्री प्रज्ञा जी, माननीय दयाशंकर दयालु जी, आयुष मंत्री उ.प्र. श्रीमती सरिता अग्रवाल-अध्यक्षा, नगर पालिका गाजीपुर आदि थे।

समारोह में २० दिसम्बर, २०२३ को विशाल शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से निकाली गयी। विविध सम्मेलन धर्म रक्षा, वैदिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा, धनुर्विद्या एवं महिला सम्मेलन सहित २०० कुण्डीय बृहद् यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। आर्य समाज गाजीपुर के समस्त पदाधिकारीगणों का सम्मान महामहिम राज्यपाल व आदरणीय सभा प्रधान द्वारा किया गया।

समारोह में सर्वश्री आदित्य प्रकाश आर्य अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मेन्द्र जायसवाल, संतोष कुमार वर्मा, संजय कुमार वर्मा, अजय केसरी, मनोज जायसवाल, मोहन प्रसाद, नीलकमल जी आदि सहित हजारों नर-नारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष कुमार वर्मा जी-मंत्री आर्य समाज गाजीपुर ने एवं आगन्तुकों को धन्यवाद ज्ञापन श्री दिलीप वर्मा जी प्रधान आर्य समाज गाजीपुर ने दिया।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

स्वामी श्रद्धानन्द महापुरुष थे

लाला मुंशीराम जालन्धर के अत्यन्त प्रतिष्ठित वकील थे। उनकी वकालत बहुत ऊँचे दर्जे की थी। वकील के रूप में उन्होंने प्रचुर धनराशि एवं यश अर्जित किया। पर अकस्मात् उनको एक स्वप्न आया और उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए उन्होंने अपनी सुख-समृद्धि को लात मारी और हरिद्वार से पाँच मील दूर घने जंगल में काँगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। मुझे सन् १९०३ से १९१७ तक १४ वर्ष उनके चरणों में रहकर विद्याभ्यास करने का सौभाग्य मिला। उन्हें मैंने रात-दिन जागरूक, घोर तपस्वी एवं लगनशील देखा। उन्होंने गुरुकुल को अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया, यहां तक कि अपने वस्त्र, भोजन आदि के लिए भी गुरुकुल से एक भी पैसा नहीं लिया। इस प्रकार अपने त्याग, परिश्रम एवं अध्यवसाय से गुरुकुल को उच्च शिखर पर पहुँचा दिया और सन् १९१७ में स्वयं संन्यास ले लिया।

मैंने उनकी महानता के अनेक चित्र देखे। सन् १९१५ में महात्मा गाँधी जी को उनके चरणों में झुकते देखा। सन् १९१४-१५ के लगभग वायसराय को सिर झुकाते देखा, जब वायसराय द्वारा गुरुकुल से प्रभावित होकर कुछ अनुदान देने का प्रस्ताव किया गया। बाद में स्वामीजी वायसराय के निमन्त्रण पर उनसे मिलने शिमला भी गये। यू.पी. के तत्कालीन गवर्नर लार्ड मेस्टन तीन-चार बार स्वयं महात्मा जी से मिलने गुरुकुल आये। श्री रेम्जे मैकडोनाल्ड - जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री बने-तो एक बार एक दिन के लिए ही गुरुकुल आये थे, पर वे स्वामीजी और गुरुकुल से इतना प्रभावित हुए कि एक के बजाय तीन दिन उनके साथ रहे। यही नहीं, बल्कि वापस जाकर उन्होंने लिखा कि 'कोई कलाकार भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए सजीव मॉडल चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुंशीराम जी) की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैण्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना माँगेगा तो इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन की प्रेरणा दूँगा।' श्री सी. एफ. एण्डुज तो कई बार गुरुकुल आकर रहते और स्वामीजी से प्रेरणा ग्रहण करते थे। व उनके घनिष्ठ मित्र बन गये थे। महात्मा गाँधी को स्वामीजी का प्रथम परिचय सी.एफ. एण्ड्रयूज ने ही दिया था और दक्षिणी अफ्रीका से भारत वापस आने पर स्वामीजी से मिलने की प्रेरणा दी थी।

इस प्रकार मैंने तो कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्दजी को महापुरुष के रूप में ही पूजा। वे न केवल महापुरुष थे, वरन् महात्मा भी थे। महात्मा गाँधी के शब्दों में, 'अगर कोई मुझे 'महात्मा' के नाम से पुकारता भी था तो मैं यही सोच लेता था कि महात्मा मुंशीरामजी के बदले भूल से मुझे किसी ने पुकार लिया होगा ...मैं जानता था कि हिन्दुस्तान की जनता ने उन्हें उनकी देश सेवा के लिए महात्मा की उपाधि दी'।

ऐसे महापुरुष एवं महात्मा को मैं हृदय से प्रणाम करता हूँ और अत्यन्त आदर भाव से उनका स्मरण करता हूँ।

-वैद्य धर्मदत्त विद्यालंकार की कलम से...

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ द्वारा पंजीकृत समस्त आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है। सभा द्वारा जारी विवाह प्रमाण पत्रों में जारी किये गये प्रमाण पत्रों की ''सभा प्रति'' सभा कार्यालय में अतिशीघ्र जमा करा दें।

-कार्यालय अधीक्षक
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ त्रयोदश समुल्लास

अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

जबूर का दूसरा भाग

काल के समाचार की पहली पुस्तक

योहन रचित सुसमाचार

१२८-जिसके सम्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गये और उनके लिये जगह न मिली। और मैंने क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकों को ईश्वर के आगे खड़े देखा और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात् जीवन का पुस्तक खोला गया और पुस्तकों में लिखी हुई बातों से मृतकों का विचार उनके कर्मो के अनुसार किया गया।

-यो० प्र० प० २०। आ० ११। १२।।

(समीक्षक) यह देखो लड़कपन की बात! भला पृथिवी और आकाश कैसे भाग सकेंगे ? और वे किस पर ठहरेंगे? जिनके सामने से भगे। और उसका सिंहासन और वह कहाँ ठहरा ? और मुर्दे परमेश्वर के सामने खड़े किये गये तो परमेश्वर भी बैठा वा खड़ा होगा? क्या यहां की कचहरी और दूकान के समान ईश्वर का व्यवहार है जो कि पुस्तक लेखानुसार होता है? और सब जीवों का हाल ईश्वर ने लिखा वा उसके गुमाश्तों ने ? ऐसी-ऐसी बातों से अनीश्वर को ईश्वर और ईश्वर को अनीश्वर ईसाई आदि मत वालों ने बना दिया।।१२८।।

१२९-उनमें से एक मेरे पास आया और मेरे संग बोला कि आ मैं दुलहिन को अर्थात् मेम्ने की स्त्री को तुझे दिखाऊंगा -यो० प्र० प० २१। आ० ९।।

(समीक्षक) भला ! ईसा ने स्वर्ग में दुलहिन अर्थात् स्त्री अच्छी पाई, मौज करता होगा। जो जो ईसाई वहां जाते होंगे उनको भी स्त्रियां मिलती होंगी और लड़के बाले होते होंगे और बहुत भीड़ के हो जाने के कारण रोगोत्पत्ति होकर मरते भी होंगे। ऐसे स्वर्ग को दूर से हाथ ही जोड़ना अच्छा है।। १२९।।

१३०-और उसने उस नल से नगर को नापा कि साढ़े सात सौ कोश का है। उसकी लम्बाई और चौड़ाई और ऊँचाई एक समान है। और उसने उसकी भीत को मनुष्य के अर्थात् दूत के नाप से नापा कि एक सौ चवालीस हाथ की है। और उसकी भीत की जुड़ाई सूर्यकान्त की थी और नगर निर्मल सोने का था जो निर्मल कांच के समान था। और नगर की भीत की नेवें हर एक बहुमूल्य पत्थर से सँवारी हुई थीं। पहिली नेव सूर्यकान्त की थी: दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की चौथी मरकत की।। पांचवीं गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवों पोतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवीं पुखराज की, दशवीं लहसनिये की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं मर्दोष की। और बारह फाटक बारह मोती थे। एक-एक मोती से एक-एक फाटक बना था और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के ऐसे निर्मल सोने की थी।

-यो० प्र० प० २१। आ० १६/१७/१८। १९। २०। २१।।

(समीक्षक) सुनो ईसाइयों के स्वर्ग का वर्णन ! यदि ईसाई मरते जाते और जन्मते जाते हैं तो इतने बड़े शहर में कैसे समा सकेंगे? क्योंकि उसमें मनुष्यों का आगम होता है और उससे निकलते नहीं और जो यह बहुमूल्य रत्नों की बनी हुई नगरी मानी है और सर्व सोने की है इत्यादि लेख केवल भोले-भोले मनुष्यों को बहका कर फंसाने की लीला है। भला लम्बाई चौड़ाई तो उस नगर की लिखी सो हो सकती परन्तु ऊँचाई साढ़े सात सौ कोश क्योंकर हो सकती है? यह सर्वथा मिथ्या कपोलकल्पना की बात है और इतने बड़े मोती कहां से आये होंगे। इस लेख के लिखने वाले के घर के घड़े में से। यह गपोड़ा पुराण का भी बाप है।। १३०।।

१३१-और कोई अपवित्र वस्तु अथवा घिनित कर्म करनेहारा अथवा झूठ पर चलने हारा उसमें किसी रीति से प्रवेश न करेगा।। - यो० प्र० प० २१। आ० २७।।

(समीक्षक) जो ऐसी बात है तो ईसाई लोग क्यों कहते हैं कि पापी लाग भी स्वर्ग में ईसाई होने से जा सकते हैं। यह बात ठीक नहीं है। यदि ऐसा है ता योहन्ना स्वप्ने की मिथ्या बातों का करनेहारा स्वर्ग में प्रवेश कभी न कर सका होगा और ईसा भी स्वर्ग में न गया होगा क्योंकि जब अकेला पापी स्वर्ग को प्राप्त नहीं हो सकता तो जो अनेक पापियों के पाप के भार से युक्त है वह क्योंकर स्वर्गवासी हो सकता है।।१३१।।

१३२-और अब कोई श्राप न होगा और ईश्वर का और मेम्ने का सिंहासन उसमें होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। और ईश्वर उसका मुंह देखेंगे और उसका नाम उनके माथे पर होगा। और वहां रात न होगी और उन्हें दीपक का अथवा सूर्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देगा, वे सर्वदा राज्य करेंगे।।

-यो० प्र० प० २२१ आ०३४५

(समीक्षक) देखिये यही ईसाइयों का स्वर्गवास ! क्या ईश्वर और ईसा सिंहासन पर निरन्तर बैठे रहेंगे? और उनके दास उनके सामने सदा मुंह देखा करेंगे। अब यह तो कहिये तुम्हारे ईश्वर का मुंह यूरोपियन के सदृश गोरा वा अफ्रोका वालों के सदृश काला अथवा अन्य देश वालों के समान है? यह तुम्हारा स्वर्ग भी बन्धन है क्योंकि जहां छोटाई बड़ाई है और उसी एक नगर में रहना अवश्य है तो वहां दुःख क्यों न होता होगा जो मुख वाला है वह ईश्वर सर्वज्ञ सर्वेश्वर कभी नहीं हो सकता।।१३२।।

१३३-देख ! मैं शीघ्र आता हूँ और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है जिसतें हर एक को जैसा उसका कार्य ठहरेगा वैसा फल देऊंगा।। - यो० प्र० प० २२। आ० १२।।

(समीक्षक) जब यही बात है कि कर्मानुसार फल पाते हैं तो पापों को क्षमा कभी नहीं होती और जो क्षमा होती है तो इंजील की बाते झूठी। यदि कोई कहें कि क्षमा करना भी इजील में लिखा है तो पूर्वापर विरुद्ध अर्थात् 'हल्फदरोगी' हुई तो झूठ है। इसका मानना छोड़ देओ। अब कहां तक लिखे इनकी बाईबल में लाखो बातें खण्डनीय हैं। यह तो थोड़ा सा चिह्न मात्र ईसाइयों की बाइबल पुस्तक का दिखलाया है। इतने ही से बुद्धिमान् लोग बहुत समझ लेंगे। थोड़ी सी बातों को छोड़ शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसा ही बाइबल पुस्तक भी माननीय नहीं हो सकता किन्तु वह सत्य तो वेदों के स्वीकार में गृहीत होता ही है।१३३।।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनिर्मिले सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविभूषिते कृश्चीनमतविषये त्रयोदशः
समुल्लासः सम्पूर्णः।।१३।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

ईसाईमत

(बम्बई में रँवरेण्ड जौसेफ कोक पादरी से शास्त्रार्थ-१८ जनवरी,१८८२) रँवरेण्ड जौसेफ कोक ने बम्बई टाउनहाल में १७ जनवरी सन् १८८२ को एक व्याख्यान दिया जिसमें उसने बतलाया कि केवल ईसाईमत सच्चा और ईश्वर की ओर से है और यह समस्त भूमण्डल पर फैलेगा, शेष कोई मत ईश्वर की ओर से नहीं ।

स्वामी जी ने एक चिट्ठी लिखी। जिसका अंग्रेजी अनुवाद कर्नल अलकाट ने स्वामी जी के सामने करके महाराज के हस्ताक्षर कराने के पश्चात् पादरी साहव की सेवा में भेज दिया। अगले रविवार को साढ़े पांच बजे का समय क्राम जी, काऊस जो, इन्स्टीट्यूट में शास्त्रार्थ के लिए नियत किया किन्तु पादरी कोक ने एक कोरा उत्तर पत्र के द्वारा कि ''मैं चुनौतियों को स्वीकार नहीं करता है क्योंकि इनका प्रकट उद्देश्य अविश्वास को फैलाना है'' अपना पिण्ड छुड़ाया। (लेखराम पृ. ६९०)

स्वामी श्रद्धानन्द

–आचार्य विश्वव्रत शास्त्री

आधुनिक भारत में ''शुद्धि'' के सर्वप्रथम प्रचारक स्वामी दयानन्द थे तो उसे आन्दोलन के रूप में स्थापित कर सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द थे। सबसे पहली शुद्धि स्वामी दयानन्द ने अपने देहरादून प्रवास के समय एक मुसलमान युवक की की थी जिसका नाम अलखधारी रखा गया था। स्वामी जी के निधन के पश्चात् पंजाब में विशेष रूप से मेघ, ओड और रहतिये जैसे निम्न और पिछड़ी समझी जाने वाली जातियों का शुद्धिकरण किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य उनकी पतित, तुच्छ और निकृष्ट अवस्था में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार करना था। आर्यसमाज द्वारा चलाये गए शुद्धि आंदोलन का व्यापक स्तर पर विरोध हुआ क्योंकि हिन्दू जाति सदियों से कूपमण्डूक मानसिकता के चलते सोते रहना अधिक पसन्द करती थी। आगरा और मथुरा के समीप मलकाने राजपूतों का निवास था जिनके पूर्वजो ने एक आध शताब्दी पहले ही इस्लाम की दीक्षा ली थी। मलकानों के रीति रिवाज अधिकतर हिन्दूओं वाले ही थे और चौहान, राठौर आदि गोत्र के नाम से जाने जाते थे। १९२२ में क्षत्रिय सभा मलकानों को राजपूत बनाने का आवाहन कर सो गई मगर मुसलमानों में इससे पर्याप्त चेतना हुई एवं उनके प्रचारक गांव गांव घूमने लगे। यह निष्क्रियता स्वामी श्रद्धानन्द की आँखों से छिपी नहीं रही। ११ फरवरी १९२३ को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना करते समय स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुद्धि आन्दोलन आरम्भ किया गया। स्वामी जी द्वारा इस अवसर पर कहा गया कि जिस धार्मिक अधिकार से मुसलमानों को तब्लीग और तंजीम का हक है उसी अधिकार से उन्हें अपने बिछुड़े भाइयों को वापिस अपने घरों में लौटाने का हक है। आर्यसमाज ने १९२३ के अन्त तक ३० हजार मलकानों को शुद्ध कर दिया।

मुसलमानों में इस आन्दोलन के विरुद्ध प्रचण्ड प्रतिक्रिया हुई। जमायत-उल-उलेमा ने बम्बई में १८ मार्च, १९२३ को मीटिंग कर स्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आन्दोलन की आलोचना कर निन्दा प्रस्ताव पारित किया। स्वामी जी की जान को खतरा बताया गया मगर उन्होंने ''परमपिता ही मेरा रक्षक है, मुझे किसी अन्य रखवाले की जरुरत नहीं है'' कहकर निर्भीक सन्यासी होने का प्रमाण दिया। कांग्रेस के श्री राजगोपालाचारी, मोतीलाल नेहरू एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू ने धर्मपरिवर्तन को व्यक्ति का मौलिक अधिकार मानते हुए तथा शुद्धि के औचित्य को स्वीकार करते हुए भी तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ में उसे असामयिक बताया। शुद्धि सभा गठित करने एवं हिन्दुओं को संगठित करने का स्वामी जी का ध्यान १९१२ में उनके कलकत्ता प्रवास के समय आकर्षित हुआ था जब कर्नल यू. मुखर्जी ने १९११ की जनगणना के आधार पर यह सिद्ध किया कि अगले ४२० वर्षों में हिन्दुओं की अगर इसी प्रकार से जनसँख्या कम होती गई तो उनका अस्तित्व मिट जायेगा। इस समस्या से निपटने के लिए हिन्दुओं का संगठित होना आवश्यक था और संगठित होने के लिए स्वामी जी का मानना था कि हिन्दू समाज को अपनी दुर्बलताओं को दूर करना चाहिए। सामाजिक विषमता, जातिवाद, दलितों से घृणा, नारी उत्पीड़न आदि से जब तक हिन्दू समाज मुक्ति नहीं पा लेगा तब तक हिन्दू समाज संगठित नहीं हो सकता।

इसी बीच हिन्दू और मुसलमानों के मध्य खाई बराबर बढ़ती गई। १९२० के दशक में भारत में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए। केरल के मोपला, पंजाब के मुल्तान, कोहाट, अमृतसर, सहारनपुर आदि दंगों ने अन्तर और बढ़ा दिया। इस समस्या पर विचार करने के लिए १९२३ में दिल्ली में कांग्रेस ने एक बैठक का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता स्वामी जी को करनी पड़ी। मुसलमान नेताओं ने इस वैमनस्य का कारण स्वामी जी द्वारा चलाये गए शुद्धि और हिन्दू संगठन को बताया। स्वामी जी ने सांप्रदायिक समस्या का गंभीर और तथ्यात्मक विश्लेषण करते हुए दंगों का कारण मुसलमानों की संकीर्ण सांप्रदायिक सोच बताया। इसके पश्चात् भी स्वामी जी ने कहा कि मैं आगरा से शुद्धि प्रचारकों को हटाने को तैयार हूँ अगर मुस्लिम उलेमा अपने तब्लीग के मौलवियों को हटा दें। परन्तु मुस्लिम उलेमा न माने।

इसी बीच स्वामी जी को

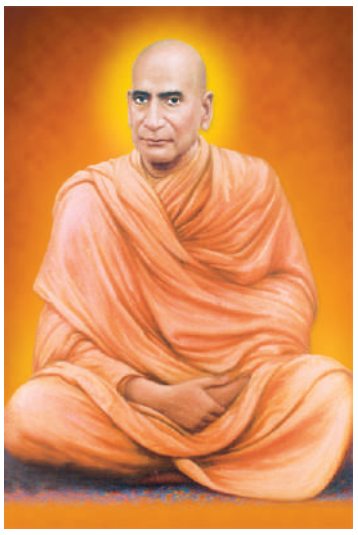

ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखी पुस्तक 'दाइए-इस्लाम' पढ़कर हैरानी हुई। इस पुस्तक को चोरी छिपे केवल मुसलमानों में उपलब्ध करवाया गया था। स्वामी जी के एक शिष्य ने अफ्रीका से इसकी प्रति स्वामी जी को भेजी थी। इस पुस्तक में मुसलमानों को हर अच्छे-बुरे तरीके से हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की अपील निकाली गई थी। हिन्दुओं के घर-मुहल्लों में जाकर औरतों को चूड़ी बेचने से, वैश्याओं को ग्राहकों में, नाई द्वारा बाल काटते हुए इस्लाम का प्रचार करने एवं मुसलमान बनाने के लिए कहा गया था। विशेष रूप से ६ करोड़ दलितों को मुसलमान बनाने के लिए कहा गया था जिससे मुसलमान जनसंख्या में हिन्दुओं के बराबर हो जायें और उससे राजनैतिक अधिकारों की अधिक माँग की जा सके। स्वामी जी ने निजामी की पुस्तक का पहले हिन्दुओं सावधान, तुम्हारे धर्म दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया है के नाम से अनुवाद प्रकाशित किया एवं इसका उत्तर ''अलार्म बेल अर्थात खतरे का घंटा'' के नाम से प्रकाशित किया। इस पुस्तक में स्वामी जी ने हिन्दुओं को छुआ छूत का दमन करने और समान अधिकार देने को कहा जिससे मुसलमान दलितों को लालच भरी निगाहों से न देखें। इस बीच कांग्रेस के काकीनाडा के अध्यक्षीय भाषण में मुहम्मद अली ने ६ करोड़ अछूतों को आधा आधा हिन्दू और मुसलमान के बीच बाँटने की बात कहकर आग में घी डालने का कार्य किया।

महात्मा गांधी भी स्वामी जी के गंभीर एवं तार्किक चिंतन को समझने में असमर्थ रहे एवं उन्होंने यंग इंडिया के २९ मई, १९२५ के अंक में 'हिन्दू मुस्लिम-तनावः कारण और निवारण' शीर्षक से एक लेख में स्वामी जी पर अनुचित टिप्पणी कर डाली। उन्होंने लिखा

''स्वामी श्रद्धानन्द जी भी अब अविश्वास के पात्र बन गये हैं। मैं जानता हूँ कि उनके भाषण प्रायः भड़काने वाले होते हैं। दुर्भाग्यवश वे यह मानते हैं कि प्रत्येक मुसलमान को आर्य धर्म में दीक्षित किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अधिकांश मुसलमान सोचते हैं कि किसी-न-किसी दिन हर गैरमुस्लिम इस्लाम को स्वीकार कर लेगा। श्रद्धानन्द जी निडर और बहादुर हैं। उन्होंने अकेले ही पवित्र गंगातट पर एक शानदार ब्रहचर्य आश्रम (गुरुकुल) खड़ा कर दिया है । किन्तु वे जल्दबाज है और शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते है। उन्हें आर्यसमाज से ही यह चीज विरासत में मिली है।'' स्वामी दयानन्द पर आरोप लगाते हुए गांधी जी लिखते हैं ''उन्होंने संसार के एक सर्वाधिक उदार और सहिष्णु धर्म को संकीर्ण बना दिया।''

गांधी जी के लेख पर स्वामी जी ने प्रतिक्रिया लिखी कि ''यदि आर्यसमाजी अपने प्रति सच्चे हैं तो महात्मा गांधी या किसी अन्य व्यक्ति के आरोप और आक्रमण भी आर्यसमाज की प्रवृतियों में बाधक नहीं बन सकते।''

स्वामी जी सधे कदमों से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। एक ओर मौलाना अब्दुल बारी द्वारा दिए गए बयान जिसमें इस्लाम को न मानने वालो को मारने की वकालत की गई थी के विरुद्ध महात्मा गांधी जी कि प्रतिक्रिया पक्षपातपूर्ण थी। गांधी जी अब्दुल बारी को 'ईश्वर का सीधा-साधा बच्चा' और 'एक दोस्त' के रूप में सम्बोधित करते हैं जबकि स्वामी जी द्वारा कि गई इस्लामी कट्टरता की आलोचना उन्हें अखरती है। गांधी जी ने न कभी मुसलमानों कि कट्टरता की आलोचना की और न ही उनके दोषों को उजागर किया। इसके चलते कट्टरवादी सोच वाले मुसलमानों का मनोबल बढ़ता गया एवं सत्य एवं असत्य के मध्य वे भेद करने में असफल हो गए। मुसलमानों में स्वामी जी के विरुद्ध तीव्र प्रचार का यह फल निकला की एक मतान्ध व्यक्ति अब्दुल रशीद ने बीमार स्वामी श्रद्धानन्द को गोली मार दी उनका तत्काल देहान्त हो गया।

स्वामी जी का उद्देश्य विशुद्ध धार्मिक था न कि राजनैतिक। हिन्दू समाज में समानता उनका लक्ष्य था। अछूतोद्धार, शिक्षा एवं नारी जाति में जागरण कर वह एक महान समाज की स्थापना करना चाहते थे। आज आर्यसमाज का यह कर्तव्य है कि उनके द्वारा छोड़े गए शुद्धि चक्र को पुनः चलाये। यह तभी सम्भव होगा जब हम मन से दृढ़ निश्चय करें कि आज हमें जातिवाद को मिटाना हैं और हिन्दू जाति को संगठित करना है

●●●

उपनिषदों में ईश्वर का स्वरूप

आचार्य डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

पाणिनि महर्षि की ज्ञा अवबोधने क्रयादि ज्ञा नियोगे चुरादि एवं मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा भ्वादि गणों वाली धातुओं से निष्पन्न ज्ञेय, ज्ञाता, ज्ञापक शब्द यह ज्ञापित करते हैं कि इस जगत् में जो कुछ है वह सब ज्ञेय है, ज्ञातव्य है। जिस ज्ञेय को गौतम मुनि ने प्रमेय' शब्द से व्यक्त किया है। जगत् में प्रमेय के ज्ञाता हैं और ज्ञाता को ज्ञान कराने वाले ज्ञापक भी हैं।

ज्ञेय ईश्वर विषय-

जगत् के ज्ञेय पदार्थों में ईश्वर का विषय भी महत्त्वपूर्ण ज्ञेय है। इस में ज्ञेय ईश्वर, ज्ञाता मनुष्य संज्ञाधारी हैं। ईश्वर विषय के प्रज्ञापक वेद, वेदानुकूल ब्राह्मणग्रन्थ, वेदांग, उपांग कहे जाने वाले दर्शन ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् आदि शास्त्र व ग्रन्थ और ऋषि, महर्षि, मुनि, आचार्य, विद्वान् आदि जन हैं। ज्ञेय, ज्ञाता, ज्ञापक इस कड़ी के ज्ञेय ईश्वर विषय को शास्त्रों और ऋषि, महर्षि, मुनियों ने अति स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया है, पर आचार्य, विद्वान् और विचारकों ने ज्ञेय ईश्वर विषय की विभिन्न परिभाषाएँ कथोपकथन प्रस्तुत कर ऐसी अदालत में खड़ा कर दिया है, जिससे जनसाधारण को निर्णय करने में भी असाध्य-सा बना दिया है।

शास्त्र दिग्गज शंकराचार्य मतावलम्बी नवीन वेदान्तियों का मानना है बस वह ही वह है अर्थात् केवल ईश्वर मात्र है, जो ब्रह्म कहा जाता है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य पदार्थ नहीं है।

बौद्धों का पूजनीय देव बुद्ध है, ईश्वर नहीं।"

विद्वानों में अपनी संख्या दर्ज कराने वाले जैन मतावलम्बियों का कथन है जो राजा है, वही ईश्वर है। स्वयं को विचारक प्रतिपादित करने वाले ईसाई मतावलम्बियों का विचार है जो गाँड है, वही ईश्वर है और चौथे आसमान पर रहता है।"

मुस्लिम विचारकों का कथन है, जो अल्लाह है, वह ईश्वर है। जिसका तख्त सदा सातवें आसमान पर रहता है

विचारक चार्वाकों का मानना है, ईश्वर नाम की कोई सत्ता ही नहीं है।

ईश्वर विषयक और भी अनेक चिन्तन हैं। आश्चर्यपूर्ण बात है, इतने चिन्तन हैं, पुनरपि ईश्वर की कोई परिभाषा व लक्षण ऐसा नहीं किया गया, जिससे सृष्टि के आदि से परिज्ञात, वेदादि शास्त्र निर्दिष्ट ईश्वर विषय सुज्ञात हो जाता?

ईश्वर परिभाषक प्रथम महापुरुष महर्षि दयानन्द-

ऋषियों के ऋषि, विचारकों के विचारक महर्षि दयानन्द ही प्रथम महापुरुष हैं, जिन्होंने वेदादि शास्त्रोक्त ईश्वर विषयक परिभाषायें व लक्षण प्रदान किये। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, आर्यसमाज के नियम, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थों, पुस्तकों में जो ईश्वर की परिभाषायें व लक्षण निर्दिष्ट किये हैं, वे सभी सत्य व अकाट्य हैं। उदाहरणतः -

प्रथम- ईश्वर जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त हैं, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता धर्तृता, हर्तृता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।

स्वमन्तव्या. १।।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

आर्यसमाज का द्वितीय नियम।।

जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि, अनन्त आदि सत्यगुण वाला है और जिसके अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु, अजन्मादि स्वभाव हैं, जिसके कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक- ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

ज्ञान के ४ साधन-

किसी भी वस्तु या पदार्थ के ज्ञान करने में उस वस्तु या पदार्थ के जो गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वरूप हैं, वे ही निमित्त बनते हैं, साधनभूत होते हैं।

ईश्वर के परिचय में भी उसके गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वरूप ही निमित्त हैं। ईश्वर सर्वोपरि है, जगत् का स्रष्टा है, जगदाधार है। ओ३म्, ब्रह्मादि जिसके नाम हैं। अनेक नामी ईश्वर का मुख्य एवं निज नाम ओ३म् है। ओ३म् पदवाच्य ईश्वर महतो महान् है, बड़ा है, अनन्त भी है। उस अनन्त ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप भी अनन्त हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा परिभाषित लक्षण में ईश्वर स्वरूप विभाग-

महर्षि दयानन्द ने उपर्युक्त ईश्वर के परिभाषित लक्षण में जो विशेषण प्रस्तुत किये हैं, उन विशेषणों को गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वरूप इन विभागों में विभक्त करें तो वह विभाग इस प्रकार होगा-

ईश्वर के सर्वशक्तिमान्, निराकार, निर्विकार, सर्वव्यापक, अनादि, सर्वान्तर्यामी, अनन्त आदि विशेषण गुण विभाग में आते हैं।

ईश्वर के सृष्टिकर्ता, जगत् की उत्पत्ति, पालन, विनाश करना, सर्वाधार सर्वेश्वर एवं सब जीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना आदि विशेषण कर्म विभाग के हैं।

ईश्वर के अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा अनुपम, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र आदि विशेषण स्वभाव विभाग में होते हैं।

ईश्वर का सच्चिदानन्द विशेषण स्वरूप विभाग में आता है।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की परिभाषाओं में एवं ईश्वर के प्रतिपादन व व्याख्यान में जो-जो विशेषण लगाये हैं, वे सभी ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को व्यक्त करने वाले हैं। वेद दर्शन आदि से प्रमाणित हैं, उपनिषदों में व्याख्यात हैं।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के किन्हीं विशेषणों में स्वरूप शब्द लगाया है, किन्हीं विशेषणों में स्वभाव शब्द लगाया है।

महर्षि ने विशेषणों के साथ स्वभाव शब्द वहाँ जोड़ा है, जहाँ ईश्वर के नैसर्गिक कर्म, प्रकृतितः करणीय कर्म, गुण आदि के अपरिवर्तनीय स्थिति को व्यक्त करना होता है।

स्वरूप शब्द वहाँ लगाया है, जहाँ ईश्वर को जाना, माना व देखा जा सकता है। ईश्वर के निराकार होने से उसे जानना, मानना देखना कठिन है। ईश्वर को जनाने के लिये सच्चिदानन्दस्वरूप", सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप ११ शुद्धस्वरूप, चेतनस्वरूप १३ आदि स्वरूप शब्द वाले ऐसे विशेषण हैं, जो ईश्वर को जानने मानने में अत्यन्त सहायक हैं।

स्वरूप शब्द वैसे तो सामान्यतया पदार्थ के गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वशब्दार्थ से अभिव्यक्त अर्थ में प्रयुक्त होता है, जिससे ईश्वर के निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी आदि सभी विशेषण स्वरूप शब्द में ही सन्निविष्ट हो जाते हैं, तथापि ऋषि ने जिन विशेषणों के साथ स्वरूप शब्द लगाया है, वे ऋषि के गम्भीर चिन्तन का परिचायक हैं।

उपनिषदों में ईश्वर स्वरूप-सत् स्वरूप-

ईश्वर का सत् स्वरूप महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र, आर्यसमाज नियम, ईश्वर परिभाषा आदि में निर्दिष्ट किया है।

सत् क्विबन्त शब्द है। सत् शब्द की निष्पत्ति, व्युत्पत्ति व अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं-

अस भुवि इस धातु से सत् शब्द सिद्ध होता है, यदस्ति त्रिषु कालेषु न बाध्यते तत् सद् ब्रह्म, जो सदा वर्तमान अर्थात् जो भूत, भविष्य और वर्तमान कालों में जिसका बाध न हो, उस परमेश्वर को सत् कहते हैं।

सत्या. प्र. पृ. २१।।

महर्षि के वचन से सुस्पष्ट है कि सत् वाच्य वह है जो तीनों कालों में रहता है। जिसकी सत्ता सदा रहती है।

ईश्वर का यह सत् स्वरूप वेदों से प्रतिपादित है और उपनिषदों में भी वर्णित है।

ईश्वर के इस सत् स्वरूप को छान्दोग्यादि उपनिषदों में निर्दिष्ट करते हुये कहा है-

सदेव सोम्येदमग्र आसीदेक-मेवाद्वितीयम्।

छान्दो. उप. ६/२/१,२।।

अर्थात् हे सोम्य ! सुशील श्वेतकेतु का पुत्र, अग्र-सृष्टि रचना से पूर्व, एकम् अकेला, अद्वितीय ही, आसीत्-सत्ता वाला था।

अस्ति ब्रह्मेति चेद् वेद ।
सन्तमेनं ततो विदुरिति।

तैत्ति. उ. ब्र.६/उ।।

अर्थात् ब्रह्म है, उसकी सत्ता है। इस प्रकार यदि जानता मानता है, उस मनुष्य को तब ही सन्तम् सत्ता वाला माना जाता है।

तात्पर्य हुआ ब्रह्म असत् नहीं है, सत्-सत्ता वाला है। ब्रह्म की सत्ता को समझने वाला ही सत्ता वाला बनता है। उसकी सत्ता से ही मानने, समझने वाले की सत्ता है, सम्पूर्ण जगत् की सत्ता है।

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।

तैत्ति उ. ब्र. २/क।।

अर्थात् वह ब्रह्म सत्यम्- सत्यस्वरूप, सत्ता वाला ज्ञानमय चित् स्वरूप व अनन्तम्-अनन्तम्, सर्व व्यापक अन्त से रहित है।

उपनिषदों में ईश्वर का चित् स्वरूप-

ईश्वर का चित् स्वरूप महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र, "आर्यसमाज नियम", ईश्वर परिभाषा" आदि में किया है।

चित् शब्द चिती संज्ञाने भ्वादि, धातु से क्विप् प्रत्यय द्वारा निष्पन्न हुआ है। जिसकी व्युत्पत्ति होगी- यः चेतति चेतयति वा इति चित् ।

महर्षि दयानन्द ने चित् शब्द की निष्पत्ति, व्युत्पत्ति और अर्थ करते हुये लिखा है-

चिती संज्ञाने इस धातु से चित् शब्द सिद्ध होता है। यश्चेतति चेतयति संज्ञापयति सर्वान् सज्जनान् योगिनस्तश्चित्परं ब्रह्म, जो चेतनस्वरूप सब जीवों को चिताने और सत्याऽसत्य का जाननेहारा है, इसलिए परमात्मा का नाम चित् है।

सत्या. प्र. १, पृ.२२।।

महर्षि के कथन का भाव यह है कि ब्रह्म के चेतनस्वरूप का प्रतिपादक चित् शब्द है। चित् स्वरूप ब्रह्म ही जगत् के जीवों को चेतना देता है, सत्यासत्य आदि का ज्ञान कराता है। महर्षि दयानन्दोक्त चित् शब्द का यह प्रतिपादन वेद प्रमाणित है।"

उपनिषदों में भी ईश्वर के चित् स्वरूप प्रतिपादक अनेक वचन हैं।

कठोपनिषद् का वचन है-

नित्योऽनित्यानां
चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो
विदधाति कामान्। तमात्मस्थं
येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः
शाश्वती नेतरेषाम् ।।

कठो. ५/१३।।

अर्थात् यः जो ईश्वर अनित्य पदार्थों में नित्य, चेतन जीवात्माओं को चेतनतादायक व जो अनेकों में एक है, सबकी कामनाओं, भोग सामग्री को पूर्ण करने वाला है, वह जीवात्माओं के अन्दर रहता है। उस अन्दर रहने वाले को जो धीर पुरुष देख लेते हैं, उनको ही चिरस्थायी शान्ति प्राप्त होती है, दूसरे अज्ञानियों को प्राप्त नहीं होती।

ईश्वर के चित् स्वरूप को प्रश्नोपनिषद् में ईक्ष दर्शने भ्वादि

क्रमशः.....५ पर

पृष्ठ ४ का शेष.....

धातु से निष्पन्न ईक्षांचक्रे, ऐक्षत आदि क्रियावाची शब्दों से स्पष्ट किया है। कहीं सर्वज्ञ, विज्ञाता आदि पदों से चित् स्वरूप निर्दिष्ट किया है। यथा-

स ईक्षांचक्रे कस्मिन्नहमुत्क्रान्ते उत्क्रान्तो भविष्यामि, कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति।
प्रश्नो. ६/३।।

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियं। मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः कर्म लोका लोकेषु च नाम च।।
प्रश्नो. ६/४।।

अर्थात् जीवात्मा के साथ रहने वाले सहबन्धु ईश्वर ने ईक्षांचक्रे देखा, चिन्तन किया, किसके निकल जाने से मैं शरीर में से निकल जाऊँगा? किसके प्रतिष्ठित होने से प्रतिष्ठित होऊँगा? इस चिन्तन से उसने विचारा।

जो १६ कलाओं से परिपूर्ण है, उसके निकलने पर मैं निकल जाऊँगा। उसने प्राण सूक्ष्म शरीर को बनाया। प्राण से श्रद्धा, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, ये पंचभूत ज्ञान और कर्म, इंद्रियाँ, मन, अन्न, अन्न से वीर्य, तप= शरीर साधना, मन्त्र-मननशक्ति, कर्म प्रयत्न, लोक-रूप एवं नाम-संज्ञा बनाये।

ये प्राण आदि १६ कलायें कही जाती हैं। इनके रहने से जीवात्मा शरीर में रहता है, इनके निकलने पर जीवात्मा निकल जाता है। जीवात्मा के निकलते ही तत्रस्थ ईश्वर के द्वारा चित्-चेतनता कर्म का भान न होने से ईश्वर का निकलना समझा जाता है।

छान्दोग्य उपनिषद् में चित्रस्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा-

तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति तत्तेजोऽसृजत।

अर्थात् तद्-उस पूर्वोक्त चित् रूप चेतन शक्ति ने चाहा कि मैं बहुत हो जाऊँ, प्रजा वाला बनूँ। उसने तेज को रचा।

ऐतरेय उपनिषद का वचन है-

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किंचन मिषत् स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति ।।
ऐत. उप.१/१।।

अर्थात् निश्चय से जगन्नियता परमात्मा ही एकः-अकेला ही सृष्टि रचना से पूर्व था, अन्य दूसरा कुछ भी आँख की गति करता हुआ जीवधारी नहीं था, उस परमात्मा ने ईक्षत देखा, मन में विचारा, लोकान् प्राणियों के शरीर एवं पृथिवी आदि लोकों को, न-अवश्य ही बनाऊँ, ऐसा विचार किया।

सर्वज्ञ पद से चित् स्वरूप को व्यक्त करते हुये मुण्डकोपनिषद् में कहा है-

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः।
तस्मादेतद् ब्रह्म नाम रूपन्नं च जायते।।
मुण्ड. उप.२/६।।

अर्थात् जो सर्वज्ञाता, सब में व्याप्त सर्वव्यापक है, जिसका ज्ञानस्वरूप तप है, कर्म है। उस तप से यह ब्रह्म बेदज्ञान, नामरूप वाला जगत् और अन्न उत्पन्न होता है।

ईश्वर के चित् स्वरूप को विज्ञाता पद से स्पष्ट करते हुये बहदारण्यकोपनिषद् में कहा-

नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा...
नान्योऽतोऽस्ति विज्ञाता।।
बृहदा. उप.३/७/२७

अर्थात् अन्तर्यामी से बढ़कर कोई दूसरा द्रष्टा नहीं है...इससे बढ़कर कोई अन्य विज्ञाता नहीं है। विद ज्ञाने धातु से ईश्वर के चित् स्वरूप को व्यक्त करते हुये श्वेताश्वतरोपनिषद् में कहा गया है-

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्।।

अर्थात् हस्त, पाद से रहित भी शीघ्र गति करने वाला, बिना हाथों के पकड़ लेता है, बिना नेत्रों के देखता है, वह बिना कान के सुनता है, वह जानने योग्य को जानता है, विचारता है और उसको जानने वाला कोई नहीं है, उस पुरुष को सृष्टि से पूर्व विद्यमान महान् कहते हैं।

ईक्षण, सर्व ज्ञान, विज्ञान, जानना आदि चेतन द्वारा ही सम्भव है, अतः ये ईक्षण आदि का कथन करने वाले वचन परमात्मा के चित्रस्वरूप के प्रतिपादक हैं।

उपनिषदों में ईश्वर का आनन्द स्वरूप-

ईश्वर का आनन्द स्वरूप महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र, आर्यसमाज'' नियम, ईश्वर परिभाषा आदि में प्रतिपादित किया है।

आनन्द शब्द घञ् प्रत्ययान्त है। आनन्द शब्द की निष्पत्ति, व्युत्पत्ति निर्दिष्ट करते हुये महर्षि दयानन्द लिखते हैं-

टुनदि आङ् समृद्धौ पूर्वक इस धातु से आनन्द शब्द बनता है। 'आनन्दन्ति सर्वे' मुक्ता यस्मिन, यद्वा यः सर्वान् जीवानानन्दयति स आनन्दः' जो आनन्दस्वरूप, जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते, और जो सब धर्मात्मा जीवों को आनन्दयुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम 'आनन्द' है।

सत्या. प्र. पृ.२१।।

महर्षि के वचन से व्यक्त है कि आनन्द संज्ञा ईश्वर की है, क्योंकि मुक्त जीवों एवं धर्मात्मा जीवों को ईश्वर आनन्द देता है।

ईश्वर का यह आनन्दस्वरूप वेदों में अमृत शब्द से व्याख्यात है। उपनिषदों में ईश्वर का आनन्दस्वरूप प्रायेण आनन्द शब्द से ही प्रतिपादित है। यथा-

मुण्डकोपनिषद् का ईश्वर के आनन्दस्वरूप का प्रतिपादक वचन है--

तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति।

अर्थात् ब्रह्मपुर हृदयाकाश में प्रतिष्ठित उस ईश्वर के जानने से ही धीराः ज्ञानी आनन्दस्वरूप वाला अमर जो प्रकाशित हो रहा है, उसे देखते हैं।

ईश्वर के आनन्दस्वरूप के प्रतिपादक तैत्तिरीयोपनिषद् के कथन हैं-

रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति। को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात्। यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्। एष ह्येवानन्दयति।
तैत्ति. उप. ब्र.२/७

अर्थात् वह निश्चय से रसः आनन्दस्वरूप है। रसम्- आनन्द स्वरूप ब्रह्म को ही प्राप्त कर यह जीवात्मा आनन्द वाला हो जाता है। कौन ही जी सकता है? कौन श्वास, प्रश्वास ले सकता है? यदि वह हृदयाकाश में आनन्दस्वरूप ब्रह्म न होवे। यह आनन्दस्वरूप ब्रह्म ही जीवात्मा को आनन्दमय करता है।

एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रामति ।

अर्थात् इस आनंदमय आत्मा को जीवात्मा प्राप्त होता है।

तैत्ति. उप. ब्र.२/८

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चनेति।
तैत्ति. उप. ब्र.२/६ झ।।

अर्थात् वह ब्रह्म के आनन्द को जानने वाला, अनुभव करने वाला किसी से भी नहीं डरता है।

अन्योऽन्तर आत्मा आनन्दमयः।
तैत्ति. उप. ब्र.२८५ ङ।।

अर्थात् जीव से भिन्न दूसरी अन्तर्वर्ती आत्मा आनन्दस्वरूप वाला है।

तस्य प्रियमेव शिरः। मोदो दक्षिणः पक्षः। प्रमोद उत्तरः पक्षः। आनन्द आत्मा।
तैत्ति. उप. ब्र. २/५ ङ।।

अर्थात् उस ब्रहा का प्रेम सिर है। मोद-प्रसन्नता दक्षिणी भाग है। प्रमोद हर्ष दायाँ भाग है। आनन्दस्वरूप उसकी आत्मा ढाँचा है।

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति । आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति ।
तैत्ति. उप. भृ. ३/६।।

अर्थात् भृगु ने आनन्द ही ब्रह्म है ऐसा जाना, क्योंकि आनन्द से ही निश्चय से ये भूत उत्पन्न होते हैं। आनन्द साधन के द्वारा ही भूत जीवित रहते हैं, प्रलय में आनन्द में ही लौट जाते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् का उपरोक्त यह वचन ईश्वर के आनन्दस्वरूप की महिमा का यह ख्यापक है।

बृहदारण्यकोपनिषद् में ईश्वर के आनन्दस्वरूप प्रतिपादक कई वचन हैं। यथा-

विज्ञानमानन्दं ब्रह्म।
बृहदा. उप. ३/६/२८।।

अर्थात ब्रह्म= सबसे बड़ा ईश्वर ज्ञानस्वरूप है एवं आनन्दस्वरूप है।

एषोऽस्य परम आनन्द एतस्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति।
बृहदा. उप. ४/३/३२।।

अर्थात् यह ही इस जीवात्मा का सर्वोत्तम आनन्द है। इसी आनन्द की दूसरे बद्ध प्राणी अंश मात्र को प्राप्त करते हैं, उपभोग करते हैं।

छान्दोग्योपनिषद में ईश्वर के आनन्दस्वरूप को सुख शब्द के द्वारा व्यक्त किया है। यथा-

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति।
भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति।।
छान्दो. ७/२३/१।।

अर्थात् जो निश्चय से भूमा असीम महान् ब्रह्म है। वह ही सुख है, अल्प में सुख नहीं है। भूमा ही सुखस्वरूप है, आनन्दस्वरूप है।

ईश्वर के सत्, चित् आनन्दस्वरूप को उपनिषदों के ये सभी वचन सुस्पष्ट रूप से व्यक्त कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने आनंद, सत्, चित् शब्दों का व्याख्यान करके १ पंक्ति लिखी है। यथा- इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप कहते हैं।

सत्या. प्र. पृ.२२।।

उपनिषदों में ईश्वर का अनन्त स्वरूप-

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की परिभाषा व लक्षण में सच्चिदानन्दस्वरूप विशेषण लिखा है, वैसे ही 'सच्चिदानन्दस्वरूप'' यह विशेषण भी निर्दिष्ट किया है, जिसमें अनन्त शब्द है।

ईश्वर का अनन्त स्वरूप वेद प्रतिपादित है। उपनिषदों में भी ईश्वर का अनन्त स्वरूप वर्णित है। यथा-

ईश्वर के अनन्त स्वरूप को व्यक्त करते हुये कठोपनिषद् में कहा है-

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्चय यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निश्चाय्यं तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते।।
कठो. ३/१५।।

अर्थात् शब्द से अगृहीत, स्पर्श रहित, रूप रहित, अविनाशी और स्वाद रहित, नित्य, गन्ध रहित और जो ब्रह्म अनादि, अनन्त, महत् कार्य प्रकृति से अतिसूक्ष्म है, ध्रुव, एकरस है, उस ब्रह्म के उस स्वरूप को जानकर, जीवात्मा जन्म, मरण के मुख से छूट जाता है।

ईश्वर के अनन्तस्वरूप का प्रतिपादक श्वेताश्वरोपनिषद् का वचन है-

अनाद्यनन्तं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्त्रष्टारमनेकरूपम्।
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।।
श्वेता. उप.५/१३।।

अर्थात् वह अद्वितीय ईश्वर परिवर्तनशील जगत् के मध्य अनादि है, अनन्त है।

जगत् के रचने वाले को अनेक रूप वाले सम्पूर्ण जगत् के अद्वितीय परिवेष्टा-आच्छादन कर्ता को, परमदेव ईश्वर को जानकर सब पाशों से छूट जाता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् में ईश्वर के अनन्तस्वरूप को व्यक्त करते हुए कहा गया है-

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।
तैत्ति. उ. ब्र.२/१ क।।

अर्थात ब्रह्म सत्य स्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है, अनन्त स्वरूप है।

इस प्रकार उपनिषदों के शब्दों से स्पष्ट है कि ईश्वर सत्, चित्, आनन्द स्वरूप वाला है।

ईश्वर के जैसे सत्, चित्, आनन्द, अनन्त स्वरूप हैं, वैसे ही शुद्धस्वरूप, प्रकाशस्वरूप, मोक्षस्वरूप, तेजस्वरूप आदि अनेक स्वरूपों का महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में निर्देश किया है। वे सभी स्वरूप वेद प्रमाणित तो हैं ही, उपनिषदों में भी सुस्पष्ट प्रतिपादित हैं, व्याख्यात हैं, वर्णित हैं।

साभार-परोपकारी दिसम्बर (द्वितीय) २०२३

दूरभाष-९६८०६७४७८१

स्वामी श्रद्धानन्द एक परिचय

–डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री

प्रस्तावना– भारत के दिगदिगन्त को अपने तेजस्वी एवं देदीत्यमान व्यक्तित्व से आलोकित करने वाले विश्व बन्धुत्व के उदगता महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर योद्धा सन्यासी वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक शुद्धि आन्दोलन की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति देने वाले एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के पांचजन्य से गगनमण्डल को निनादित करने वाले महान देशभक्त अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को स्वान्त्रयोत्तर भारत की पीढ़ी भूल गई है। १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और २०वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में राष्ट्र निर्माण के लिए विख्यात कुछ गिने-चुने व्यक्तियों में से एक महात्मा मुंशीराम थे। जो आगे चल कर स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुये। स्वतंत्रता संग्राम के वीर योद्धा के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द वीरता और त्याग बलिदान के जीवान्त प्रतीक थे।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म– पंजाब के प्रसिद्ध शहर जालंधर जिले के तलवन कस्बे के निवासी एवं उत्तर प्रदेश में उच्च पुलिस अधिकारी घोर पौराणिक मूर्ति पूजक एवं रामचरित मानस के भक्त धर्मात्मा श्री नानक चन्द जी के घर में १९१३ विक्रमी संवत अर्थात् १८५६ में एक पुत्र का जन्म हुआ। जिनका प्रारम्भ में नाम बृहस्पति रखा गया, किन्तु बाद में उनके पिता उन्हें मुंशीराम के नाम से पुकारने लगे। जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुये।

बाल्यकाल– मुंशीराम भी धर्म के क्षेत्र में अपने पिता के पद चिन्हों पर चले। एक टांग पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ पढ़ना एवं शनिवार को बालकाण्ड का पाठ प्रारम्भ कर रविवार को लंकाकाण्ड समाप्त कर भोजन करना, प्रातःकाल उठकर गंगास्नान करना एवं बाबा विश्वनाथ के दर्शन कर देवी देवताओं की पूजा करना उनका नित्य कर्म था।

नास्तिक बने– एक दिन जब वे दर्शनार्थ विश्वनाथ मन्दिर के फाटक पर गए तो पहरेदार ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया क्योंकि उस समय रीवां रियासत की रानी दर्शन कर रहीं थी। इस घटना ने उन्हें विक्षुब्ध कर दिया और ईश्वर के अस्तित्व पर से उनका विश्वास उठ गया। बार-बार एक प्रश्न उन्हें उब्देलित करता रहा कि क्या ईश्वर के राज्य में भी छोटे-बड़े का भेद-भाव होता है।

महर्षि दयानन्द के दर्शन– अपने लाड़ले बेटे का पतन देख पिता नानकचन्द जी बहुत दुःखी हुये। उन दिनों नानकचन्द जी का स्थानान्तरण कोतवाल पद पर बॉसबरेली हो गया था और संयोगवश महर्षि दयानन्द के यहाँ व्याख्यान चल रहे थे। सभा में गड़बड़ी न होने देने के लिए श्री नानकचन्द जी को सभा स्थल पर तैनात किया हुआ था। महर्षि का भाषण सुनकर श्री नानकचन्द जी बहुत प्रभावित हुए, उन्होंने घर जाकर अपने पुत्र से कहा-बेटा मुंशीराम एक दण्डी सन्यासी आये हैं, बड़े विद्वान और योगीराज हैं। उनकी वक्तता से तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना। पिता का मन रखने के लिए मुंशीराम अनिच्छा से चले तो गये परन्तु महर्षि का व्याख्यान सुन कर वास्तव में बहुत प्रभावित हुये। महर्षि ने मुंशीराम के प्रश्नों के जो उत्तर दिये तो वे निरुत्तर हो गये। मुंशीराम ने पराजित होकर अन्त में कहा महाराज! आपकी तर्कशक्ति बड़ी प्रबल है। आपने मुझे चुप तो कर दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वरी भी कोई हस्ती है। महाराज पहले हंसे फिर गम्भीर स्वर से कहा ''देखो तुमने प्रश्न किये मैने उत्तर दिये-यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूँगा तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब यह प्रभु तुम्हें विश्वासी बना देंगे।

कायापलट– मुंशीराम को शराब ने दबा लिया था। पूरी बोतल चढ़ा जाने पर भी न पैर डगमगाते और न वाणी लड़खड़ाती। एक मित्र के शराब के नशे में अतिशय निन्दनीय आचरण से विरक्ति उपजी। आगे स्वयं के शब्दों में-परन्तु पुराने आचरण के अनुसार यह सूझी कि विशेष बोतल समाप्त करके सदा के लिए उसके प्रलोभन से मुक्त हो जाऊं। इस विचार में पूरा गिलास चढ़ा ही था कि मानसिक दृष्टि के सामने से एक ओर पर्दा उठा उस यति दयानन्द की विशाल मूर्ति कौपीन लगाये शरीर में विभूति रमाये और हाथ में मोटा लट्ठ लिये सामने आ खड़ी हुई। ऐसा जंचा मानों महात्मा कह रहे हैं क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास नहीं हुआ। आंखे मली मूर्ति सामने न थी परन्तु हृदय कांप उठा गिलास जो फेंका तो सामने की दीवार में लगकर चूर-चूर हो गया। फिर बोतल उठाकर जोर से फैंका वह भी दीवार से टकराकर टुकड़े टुकड़े हो गया। इस समय मुंशीराम जी की आयु २८ वर्ष की थी।

ऊर्ध्वारोहण– पतन के रसातल से अब मुंशीराम जी की ऊर्ध्वलोक कि यात्रा प्रारम्भ होती है, घोर नास्तिक अति घोर अस्तित्व बन गया। तत्कालीन मुंशीराम जी ने लाहौर में आर्य समाज से सत्यार्थ प्रकाश लाकर पढ़ा। और सत्यार्थ प्रकाश अनुसार अपना जीवन ढालना प्रारम्भ कर दिया। अपने पतन के दिनों को याद करके उनकी आंखों से अविरल आंसू बहने लगते। अपने और महर्षि दयानन्द जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अत्यधिक मार्मिक शब्दों में लिखा।

ऋषिवर! मेरे निर्मल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है। कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुम्हारे सतसंग ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया भगवान मैं तुम्हारा ऋणी हूँ ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ मैं परमपिता से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनाने की शक्ति प्रदान करें।

आर्य समाज का फकीर– इसके बाद तो मुंशीराम आर्य समाज और दयानन्द का फकीर बन गया और तानपूरा लेकर पंजाब की गली में दयानन्द आर्य समाज और वैदिक संस्कृति के गीत गाता रहा और १८२२ तक वकालत भी करता रहा।

साध्वी पत्नी– १८७८ में सामाजिक प्रथा के अनुसार मुंशीराम की १२ वर्षीय धर्मपरायण कन्या शिवदेवी जी से विवाह हो गया। वे बड़ी साध्वी तथा पतिव्रता थी। १३ वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद ही १८ अगस्त १८९१ को पत्नी शिवदेवी का २५ वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया था। उस समय श्रद्धानन्द जी की आयु ३५ वर्ष थी। तो उनकी पत्नी अपने पीछे दो पुत्र और दो पुत्रियों को छोड़कर परलोक सिधार गयीं।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना– मुंशीराम जी का विचार था कि वैदिक संस्कृति के अनुरूप शिक्षण संस्थायें खोले बिना 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को पूरा नहीं किया जा सकता। फाल्गुन बदी १० सम्वत् १९५८ अर्थात् २ मार्च, १९०२ को हरिद्वार के पास गंगा नदी के किनारे गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की जो आजादी के दीवानों का केन्द्र बना। गुरूकुल के ८० प्रतिशत स्नातकों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और आगे कई वर्षों तक जेल में रहे गुरूकुल में ब्रह्मचारियों में देश के लिये सर्वस्व समर्पित करने की भावना भरी जाती थी। इंग्लैंड के पूर्व प्रधानमंत्री रेमजे मैकडानल्ड जब भारत वर्ष आये तो महात्मा मुंशीराम जी के दर्शन की अक्षम्य कामना से प्रेरित होकर गुरूकुल कांगड़ी पहुंचे। इस भव्य मूर्ति के दर्शन करके भावविभार हो उठे और उनके विशाल व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए निम्न लिखित उदगार प्रकट किये। ''वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईशा की मूर्ति बनाने के लिए कोई सजीव माडल चाहे। तो वे इस मूर्ति (महात्मा मुंशीराम जी) की ओर इशारा करूंगा, यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार द्वारा शेडपीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उनसे इस जीवित भव्य मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा परन्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि शैडपीटर स्वामी जी के सामने मछि हारा लगाता है।

सन्यासी बने श्रद्धानन्द– उन्होंने १९१७ में सन्यासी बनकर श्रद्धानन्द नाम रखा इसके बाद उन्होंने गुरूकुल के बजाय दिल्ली को अपना स्थायी निवास स्थान बना लिया। दिल्ली में उन्होंने सामाजिक नैतिक तथा सांस्कृतिक सुधारों और जनसाधारण विशेषकर तथा कथित राष्ट्र की भलाई के लिए कई संस्थानों की स्थापना की उन्होंने २ प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों-उर्दू तेज और हिन्दी अर्जुन की भी शुरूआत की।

स्वातन्त्र्य समर के नायक– गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय देश की नरसरी बन गया गुरुकुल के स्नातक स्वातन्त्रय में विप्लव मचाने लगे। इन स्वातन्य संग्राम स्नातकों का आचरण इस समय का अबतक मूक दर्शक बना रहा था अब देश की स्वाधीनता के लिए वे महात्मा गांधी के साथ समर भूमि में कूद पड़े। महात्मा गांधी असहयोग आन्दोलन के प्रधान थे और स्वामी श्रद्धानन्द उप प्रधान ३० मार्च, १९१९ को दिल्ली में रोलट ऐक्ट के विरोध में आपके नेतृत्व में एक विशाल ऐतिहासिक जुलूस निकाला और गोरखों की संगीनों के आगे अपनी छाती खोलकर निर्भयता पूर्वक कहा-''लो मैं खड़ा हूँ गोली मारो''।

आर्य समाज सीतापुर में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज सीतापुर में दिनांक २४ दिसम्बर, २०२३ को साप्ताहिक सत्संग में देव यज्ञ के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर समाज के मंत्री श्री गोपी कृष्ण आर्य ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए। ''स्वामी जी को अछूतों का मसीहा व हिन्दू जाति का रक्षक बताया। उन्होंने शुद्धि आन्दोलन के द्वारा लाखों मलकानों आदि को शुद्ध कर पुनः हिन्दू जाति वापस लाये। यदि स्वामी श्रद्धानन्द न होते तो आज हिन्दुओं का नामोनिशान मिट जाता।''

इस अवसर पर सर्वश्री शचीन्द्र मिश्र, दिनेश दिलवानी, जसवन्त आर्य, राजेन्द्र कुमार यादव, धर्मेन्द्र शर्मा, शिव शंकर वैश्य, सन्त राम आर्य आदि उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानन्द के वचनामृत

- परमेश्वर करे ऐसे पागल पैदा हों जो मनुष्यों को ब्रह्मचर्य और सदाचार की पवित्र वेदी पर मान-अपमान तथा सर्वपाशवीय भावों को स्वाहा करना सिखायें।
- आत्मविचार की आवश्यकता व्यक्तियों को ही नहीं मनुष्य समाजों और जातियों को भी है।
- धर्म का प्रचार रुपये नहीं निःस्वार्थ बलिदान चाहता है ।
- कॉलेज राबी या यमुना के इस पार हो वा उस पार इससे कुछ लाभ नहीं, जब तक कि माता-पिता के उत्तम संस्कारों से प्रभावित होकर बालक आचार्य कुल में निवास नहीं करता ।
- मैंने सन्यास का अर्थ कर्म का न्यास नहीं समझा, प्रत्युत गुरुवर स्वामी दयानन्द के चरण चिन्हों पर चलने का यत्न करते हुए कर्म फल में अनासक्ति को ही सन्यास समझा है, इसलिये मैं उनके साथ सहमत नहीं जो कहते हैं कि सर्व कर्म-नाशी सन्यासी होता है।
- मेरी सम्मति में भारतीय राष्ट्र की पहली आवश्यकता यह है कि जनता को ब्रह्मचारी बनाकर और उसमें सहनशक्ति फूंककर एक आत्मोन्नत स्वराज्य सेना खड़ी की जाये तब वैयक्तिक गुलामी की जंजीरें काटकर अत्याचार से युद्ध हो सकेगा।
- वह दिन दूर नहीं है जब आर्य हिन्दू समाज संघ से सुसज्जित होकर व्यक्ति और समष्टि दोनों को बलवान् बनाकर सारे संसार के अन्य समाजों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा।
- जब तक अपवित्रता पृथक् नहीं होती और पवित्रता का राज्य अन्तःकरण के अन्दर नहीं आता, तब तक दुःख दूर नहीं हो सकते।
- जो मनुष्य अपने को संसार की बेहूदगियों से परे नहीं रख सकते, जो मित्र को पाप करते देखकर उसे रोकना तो दूर रहा उसके पाप में मिल जाते हैं, उन्हें किसी धार्मिक संस्था के नेता होने का अधिकार नहीं।

गाँधी के पहले राजनीतिक शिकार–स्वामी श्रद्धानन्द

–डॉ० विवेक आर्य

जिन्होंने इतिहास के उन पन्नो को पलटा है, जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे थे, तब उन्होंने आर्थिक सहायता के लिये अभ्यर्थना भारत से की। उन दिनों गुरुकुल कांगड़ी में २-३ अंग्रेजी अखबार आते थे। स्वामी श्रद्धानंद ने उन अखबारों के आधार पर गांधीजी की सहायता करने की सोची। गुरुकुल के छात्रों ने दिसम्बर की ठण्ड में गंगा किनारे कुछ श्रम कर कुछ रुपये इकठ्ठे करके 'गुरुकुल सहायता' के नाम से उनको भेजे।

स्वामी श्रद्धानंद आयु, ज्ञान, अनुभव तथा सेवा में गांधी से श्रेष्ठ और ज्येष्ठ तो थे ही। इस कारण गांधी उन्हें बड़े आदर से 'बड़े भाई जी' शब्द से सम्बोधित किया करते थे। स्वामी श्रद्धानंद कांग्रेस में देश सेवा हेतु शामिल हुए थे, परन्तु हिन्दू-मुस्लिम एकता के नाम पर मुसलमानों की चापलूसी, हिन्दू हितो की अपेक्षा, खिलाफत आन्दोलन को समर्थन, दंगो की निन्दा तक न करना, अछूतों (दलित) कहे जाने वाले ँकरोड़ हिन्दुओ के हित में कोई कदम न उठाना जैसे अनेक विषय थे जिनके कारण स्वामीजी को कांग्रेस से अलग होना पड़ा। भारतीय आश्रम-व्यवस्था में वानप्रस्थी को 'महात्मा' शब्द से ही सम्बोधित किया जाता है। उन दिनों जब गुरुकुल का वार्षिकोत्सव था, गांधी स्वामीजी से मिलने पहुंचे थे। स्वामीजी उनको कोई उपहार या भेंट देना चाहते थे। ऋषि-मुनियों की परम्परा को मानते हुए स्वामीजी ने वार्षिकोत्सव के अंतिम दिन लाखों दर्शकों की उपस्थिति में गांधी से कहा आप मुझे अपना बड़ा भाई मानते हैं, इस बड़े भाई के पास तुम्हे देने के लिये के लिये एक ही वस्तु है। मैं अपना महात्मा (तब स्वामीजी महात्मा मुंशीराम के नाम से जाने जाते थे) उपाख्य इस अवसर पर आपको सादर भेंट करता हूँ। इसे अभी स्वीकार करलो। फिर क्या था, लाखों लोगों ने करतल ध्वनि की। कुछ लोग जानबूझकर इस घटना छिपाते हैं और मिथ्या घटना तक बुनते हैं की ये उपाधि गांधी को रविन्द्रनाथ टैगोर ने दी थी। यह प्रयास गुरुकुल और स्वामी श्रद्धानंद, आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के ओर से ध्यान हटाने के लिये किया जाता है जो की एक अक्षम्य अपराध है।

१९१९ में हुए जलियांवाला कांड के कारण भयभीत जनता ने एक जुलूस निकला जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे। जब जुलूस चांदनी चौक पहुंचा तो वहां मौजूद सेना की टुकड़ी में एक सिपाही ने बन्दूक स्वामीजी के सीने पर तान दी। स्वामीजी ने सिंहगर्जना करते हुए अपने छाती पर **पड़ी चादर हटा दी और कहा "साहस है तो चलाओ गोली" लाखों की भीड़ का नेतृत्व करने वाले संन्यासी दुनिया को गरजते देख रही थी। कहते हैं इस घटना के पश्चात ३ दिनों तक पूरे दिल्ली प्रदेश में स्वामीजी का अघोषित राज कायम रहा। हिन्दू ही नही सैकड़ो मुस्लिम इस वीतराग संन्यासी के पास आते और अपनी समस्यायों का समाधान पाकर संतुष्ट होकर जाते। स्वामी श्रद्धानंद की अद्वितीय प्रभाव की खबर गांधी के कान तक पहुंचायी गयी। गांधी अपने प्रभाव की बागडोर फिसलते देखने लगे। उनमें ईर्ष्या की आग भड़क उठी। जिन्होंने गांधी के राजनीतिक क्रियाकलापों को नजदीक से देखा है, उनका स्पष्ट कथन है कि गांधी अपने बराबर किसी अन्य नेता को उठते नहीं देख सकते थे। उन्होंने अपने मार्ग में आने वाले हर नेता को चाहे वो नरम दल का रहा हो या गरम दल का, उसे किसी भी प्रकार हटाकर अपना मार्ग प्रशस्त किया। और ये एक कटु सत्य है कि उनकी इस राजनीति का पहला शिकार स्वामी श्रद्धानंद ही बने थे।**

दिल्ली की जामा मस्जिद के गुम्बद से स्वामीजी ने यह वेदमंत्र पढ़ा था-

"त्वं हि पिता वसो त्वं माता सखा त्वमेव। शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमी महे।।"

संसार के इतिहास की ये इकलौती घटना है जब 'एक काफिर' मस्जिद के मिम्बर से वेद मंत्र का उच्चारण कर रहा था। इसके बाद मुसलमानों ने अन्य मस्जिदों में भी उनके व्याख्यान करवाये। मुसलमानों पर स्वामीजी के अमिट प्रभाव की खबर गांधी को लगी। अपनी लोकप्रियता के आड़े आते श्रद्धानंद उनको अपनी व्यक्तिगत पूजा में बाधा लगे। टर्की के बादशाह और अंग्रेजों का संघर्ष को लेकर 'खिलाफत आन्दोलन' जो की भारत के लिये निरर्थक था, गांधी ने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिये अकारण ही ये आन्दोलन छेड़ जन शक्ति को भ्रमित किया। इससे कई नेता गांधी से असंतुष्ट होकर संगठन से अलग होने लगे। इनमें स्वामीजी भी थे। काकीनाडा कांग्रेस सम्मेलन में देश के ८ करोड़ अछूतों के उद्धार की जो घृणित योजना बनी, उसके कारण भी काफी असंतोष फैला। योजना के मुताबिक अछूतों को हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बांटने की बात कही गयी। यानी हिन्दू समाज के अभिन्न अंग करीब ४ करोड़ लोगों को सीधे सीधे इस्लाम की गोदी में सौंपने का षड़यंत्र था। ये बात स्वामीजी के लिये असहनीय थी क्योंकि उन्होंने तो अपना जीवन ही अछूतों के उद्धार को समर्पित कर दिया था। वे कांग्रेस से सदा के लिये अलग हो गये। उनके पीछे पीछे सेठ बिड़ला और मदन मोहन मालवीय जी ने भी कांग्रेस छोड़ दी। इस घटना ने गांधी की ईर्ष्या की आग को और भड़का दिया। उन्होंने अपने पत्रों में आर्यसमाज और स्वामीजी के विरुद्ध विष वमन किया और उनके फैलाये सांप्रदायिक जाल ने आखिर अपना रंग दिखाया और २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानंद की हत्या एक मुस्लिम के हाथों करा दी गयी। स्वामीजी की शहादत पर गांधी ने भी ऐसी वीरोचित मृत्यु की कामना की थी। वैसी मृत्यु तो खैर उनको नहीं मिली पर भारत के बंटवारे के कारण लाखों-करोड़ों हिन्दुओं की आहों से भरी मृत्यु अवश्य मिली। भगवान सब की इच्छा पूर्ण नहीं करता। पर स्वामीजी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। लाखों आर्य समाजी सदा के लिये कांग्रेस से अलग हो गये और कांग्रेस मात्र एक सांप्रदायिक पार्टी बनकर रह गयी।

महान संन्यासी को नमन।

('राष्ट्र धर्म' के जनवरी २०१६ विशेषांक से साभार)

२०२६ में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के १०० वर्ष पूर्ण होने पर हम मोदी सरकार से स्वामी जी को भारत रत्न देने की मांग करते है।

●●●

ईश्वर और वेद का परस्पर सम्बन्ध और वेदज्ञान की महत्ता

–मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर और वेद शब्दों का प्रयोग तो आर्यसमाज के विद्वानों व सदस्यों को करते व देखते हैं परन्तु इतर सभी मनुष्यों को चार वेदों और ईश्वर का परस्पर क्या संबंध है, इसका यथोचित ज्ञान नहीं है। इस ज्ञान के न होने से हम वेदों की महत्ता को यथार्थरूप में नहीं जान पाते। वेद अन्य सांसारिक ग्रन्थों के समान नहीं हैं। सभी सांसारिक ग्रन्थ अल्पज्ञ मनुयों वा विद्वानों की रचनायें हैं जिसमें ज्ञान की न्यूनता, अल्पता व ज्ञान के विपरीत अनेक बातें भी होती हैं। वेद ऐसे ग्रन्थ न होकर इस संसार के रचयिता सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सृष्टिकर्ता परमात्मा का अपना अनुभव सिद्ध अनादि व नित्य ज्ञान है। परमात्मा में वेदों में निहित ज्ञान कभी किसी समय विशेष पर उत्पन्न नहीं हुआ। परमात्मा ने इस ज्ञान को अपने किसी गुरु व माता–पिता से भी सीखा नहीं है। परमात्मा का न तो कोई गुरु है और न ही माता व पिता। वह एक स्वयंभू अनादि व नित्य सत्ता है। परमात्मा में जो ज्ञान व सामर्थ्य है वह भी अनादि व नित्य है। परमात्मा का ज्ञान सर्वथा सत्य, निर्भ्रान्त व संसार के सभी जीवों का हितकारी है। इस ज्ञान को प्राप्त होकर आचरण करने से जीवों का कल्याण होता है और इसकी उपेक्षा व इससे दूरी रखने से अपार हानि भी होती है जो ज्ञानी व अनुभव सिद्ध मनुष्य ही जान सकते हैं। यदि ऐसा न होता तो सृष्टि के आरम्भ से अब तक 1 अरब 96 करोड़ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हमारे पूर्वज इस वेदज्ञान की अपने प्राणों से भी प्रिय जानकर रक्षा नहीं करते। संसार में ज्ञान व संस्कृत भाषा का प्रकाश भी वेदों के प्रकाश से ही हुआ। यदि परमात्मा सृष्टि की आदि में उत्पन्न मनुष्यों सहित स्त्री व पुरुषों को वेदों का ज्ञान प्रदान न करते तो मनुष्य भाषा व ज्ञान की दृष्टि से सदैव अज्ञानी रहता। परमात्मा ने मनुष्यों को सृष्टि की आदि में वेदों का ज्ञान देकर सब मनुष्यों पर महती कृपा की है। हमें वेद ज्ञान के स्वाध्याय सहित उसके आचारण व प्रचार द्वारा उसकी रक्षा के समुचित प्रबन्ध करने चाहियें। जो मनुष्य ऐसा करते हैं व करेंगे वह ईश्वर की विशेष कृपाओं के पात्र होंगे। यदि वेद नहीं रहेंगे तो धरती पर मानवता भी नहीं रहेगी। वेदों से ही मानवता का प्रचार होता है। जिन ग्रन्थों में मानव हित की बातें हैं वह भी उनमें वेदों से ही पहुंची हैं, ऐसा विचार व चिन्तन करने पर स्पष्ट होता है। संसार के सभी ग्रन्थ वेदोत्पत्ति के बाद ही बने हैं। अतः सभी ग्रन्थों में जो सत्य व ज्ञान से युक्त सामग्री है उसका आधार व प्राप्ति का स्रोत वेदज्ञान ही हैं।

वेद परमात्मा का वह ज्ञान है जो वह मनुष्यों के हित करने के लिये उन्हें प्रदान करते हैं। परमात्मा को सृष्टि की रचना व पालन आदि का विशद ज्ञान व इसके निर्माण की सामर्थ्य है परन्तु उसने मनुष्यों को वेद के माध्यम से उतना ही ज्ञान दिया है जितना उनके लिये संभव, हितकर, लाभदायक एवं उपयोगी होता है। यदि हम वेद ज्ञान का अध्ययन, रक्षण एवं प्रचार करते हैं तो इससे हमें लाभ प्राप्त होता है। हम स्वयं ज्ञानी बनते हैं, सत्य व असत्य को जानने में समर्थ होते हैं, सत्य का पालन कर हम अपना व अन्यों पर उपकार करते हैं तथा इससे मानव जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होने सहित आध्यात्मिक एवं सांसारिक उन्नति से युक्त होता है। ऐसा करने से सभी मनुष्य सुखी एवं आनन्द से युक्त रहते हैं। वह व्याधियों व रोगों से दूर तथा स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए शारीरिक, मानसिक एवं आत्मा की शक्तियों से युक्त होते हैं। अतः हमें वेदों का अध्ययन कर इनसे स्वयं लाभ उठाना चाहिये और दूसरों को भी वेदाध्ययन की प्रेरणा देकर उन्हें वेदमार्ग में अग्रसर तथा परोपकार में प्रवृत्त करना चाहिये।

वेद परमात्मा में निहित नित्य ज्ञान है। यह सदैव परमात्मा में विद्यमान रहता है। इस ज्ञान का अभाव परमात्मा में कभी नहीं होता। यह भी जानने योग्य है कि परमात्मा चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को ही देते हैं। उनके द्वारा वेदज्ञान ब्रह्मा जी को दिया जाता है और इनसे चार वेदों का ज्ञान इन पांच ऋषियों के समकालीन मनुष्यों एवं भावी सभी सन्ततियों को यथा पिता से पुत्र को व आचार्य से शिष्य को प्राप्त होता हुआ सृष्टि के उत्तर काल में विद्यमान रहता है। यदि हम वेदों की सावधानी पूर्वक रक्षा नहीं करेंगे तो यह विकृतियों को भी प्राप्त होकर समाज में अन्धविश्वास, पाखण्ड व कुरीतियों आदि को जन्म देता है। महाभारत काल के बाद हमने इसका अनुभव भी किया है। आज भी हम वेदों को प्राप्त होकर भी वेद–प्रचार में कठिनाईयां अनुभव कर रहे हैं। संसार में ऐसे मनुष्य व संगठन हैं जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान की उपेक्षा करते हैं और अपने मतों की अल्पज्ञता पर आधारित असत्य मान्यताओं व विचारों का ही प्रचार करते हैं। वह वेदों की परीक्षा नहीं करते और अपने मत पन्थ के ग्रन्थों की सत्यता की भी समीक्षा कर उसमें निहित सत्यासत्य की पहचान करने का प्रयत्न नहीं करते। ऐसे ही कारणों से वेदों का समुचित आदर नहीं हो पा रहा है। इससे मनुष्य जाति का जो कल्याण हो सकता है, उसमें बाधा उत्पन्न हो रही है।

ऋषि दयानन्द ने जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों यथा ईश्वर के सत्यस्वरूप तथा मृत्यु पर विजय आदि की खोज करते हुए वेदों के सत्यस्वरूप को प्राप्त किया था। वह वेदों के यथार्थ महत्व से परिचित हुए थे और ईश्वर की प्रेरणा से ही उन्होंने वेदों के सत्य अर्थों का प्रचार किया। इस कार्य को करने के लिये उन्होंने अपने जीवन का एक–एक क्षण व्यतीत किया। उन्होंने अपने अपूर्व वेदज्ञान के आधार पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदभाष्यभूमिका, संस्कारविधि सहित ऋग्वेद एवं यजुर्वेद पर भाष्य भी लिखे। असामयिक मृत्यु के कारण वह अथर्ववेद एवं सामवेद का भाष्य पूर्ण नहीं कर सके थे। उनका ऋग्वेद का भाष्य भी पूर्ण नहीं हो सका। वेदभाष्य के इस शेष कार्य को उनके अनेक अनुयायियों व शिष्यों ने वेदार्थ की उनकी ही पद्धति के आधार पर पूरा किया जिससे आज चारों वेदों के सभी मन्त्रों का विस्तृत भाष्य हमें प्राप्त होता है। वेदों से ही ईश्वर सहित जीव तथा प्रकृति का सत्यस्वरूप जाना जाता है। ईश्वर की उपासना की विधि का ज्ञान भी वेदों से होता है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर की उपासना की विधि भी वेदमन्त्रों के आधार पर बनाई है जिससे सभी मनुष्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कर ईश्वर सहित इस समस्त सृष्टि को यथार्थरूप में जाना जा सकता है और ईश्वर को योग साधना द्वारा प्राप्त होकर उसका साक्षात्कार करने सहित मोक्ष, जो जन्म व मरण से अवकाश प्राप्त होना तथा ईश्वर के आनन्दस्वरूप में विचरण करना होता है, प्राप्त किया जा सकता है। यह लाभ वेद व ऋषि दयानन्द के वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन व उसमें बताये गये साधनों का अभ्यास करने से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

वेद ईश्वर में अनादि काल से निहित सत्यज्ञान है। वह अपने अनादि, नित्य व अनन्त ज्ञान, सर्वज्ञता व सर्वशक्तिमान स्वरूप से सृष्टि की रचना व पालन करते हैं तथा सदैव आनन्द में रहते हैं। उनमें कोई अप्राप्त व अपूर्ण इच्छा नहीं है। सभी जीवात्मायें उनकी सन्तान व शिष्यों के समान हैं। वह सबके

क्रमशः.....८ पर

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र २१ एवं २८ दिसम्बर, २०२३ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक १६ एवं १७ दिसम्बर २०२३ को १५ हनुमान रोड नई दिल्ली एवं ग्रेटर कैलाश आर्य समाज में सम्पन्न हुई। बैठक में सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रधान तथा प्रतिनिधि गण सम्मिलित हुए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २०० वी जन्म जयंती टंकारा गुजरात में धूमधाम से मनाने का निश्चय हुआ बैठक में विशेष रूप से श्री पूनम सूरी उद्योग पति श्री एस के आर्य एवं श्री योगेश मुंजाल आदि उपस्थित रहे।

पृष्ठ ७ का शेष.....

माता, पिता व आचार्य हैं। अतः सबको ज्ञानयुक्त करना उन्हीं का कर्तव्य व कार्य है। उन्होंने अपने इस कर्तव्य को सृष्टि के आरम्भ में ही पूरा किया था। आज भी वह हमें बुरा काम करने पर अन्तरात्मा में प्रेरणा कर उस बुरे काम को रोकने के लिये भय, शंका व लज्जा को उत्पन्न करते हैं। हम जब ज्ञान प्राप्ति, परोपकार, दान तथा निर्बलों की सेवा व सहायता आदि का काम करते हैं तो वह हमें उत्साह व आनन्द तथा निःशंकता की प्रेरणा करते हैं। वह हमारे सच्चे मित्र हैं। हमें अपने हृदय को विशाल बनाकर ईश्वर से प्राप्त वेदज्ञान की ऋषि दयानन्द की मान्यताओं के आलोक में परीक्षा कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिये। इसी में हमारा हित व कल्याण है। यदि हम वेदज्ञान का आचरण व रक्षा नहीं करेंगे तो इससे हमारी भावी पीढ़ियां वंचित हो जायेंगी जिसका अपकृत्य हम पर होगा। हम वेदज्ञान को प्राप्त होकर व उसका पालन एवं प्रचार कर अपने इस जीवन सहित भविष्य में भी सुरक्षित व कल्याण को प्राप्त रहेंगे।

अमर बलिदान दिवस २३ दिसम्बर १९२६

-स्वामी श्रद्धानन्द -पंडित प्रकाशचंद्र कविरत्न

दयानंद ऋषिवर के सच्चे शिष्य सत्य स्नेही सुखकंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
वेद-धर्म अनुरागी, त्यागी देशभक्त लासानी थे।
उदारचेता, नेता, मानी, ध्रुव, ध्यानी, गुरु ज्ञानी थे।
विमल विशद व्यक्तित्व, विचारक, विशुद्ध विद्यादानी थे।
देख दीन-दृग में पानी, हो जाते पानी-पानी थे।
सभा-मंच पर शोभित होते थे ज्यों तारकगण में चंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
आङ्ग्ल भाषा वेश आदि पर लूट हुए थे नर नारी।
छोड़ रहे थे धर्म, कर्म, सभ्यता, मातृभाषा प्यारी।
देख दुर्दशा यह, स्वामी के हृदय विषाद हुआ भारी।
खोले गुरुकुल, शिक्षा की प्राचीन प्रणाली विस्तारी।
पिला गए बुधजन-अलिगण को श्रुति अरविन्दसार मकरंद।
धन्य -धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
फिरंगियों की अनीति , अत्याचारों की हद हो ली थी।
'रॉलट एक्ट' बना, जनता पर खूब चलाई गोली थी।
नंगी संगीनों-सन्मुख स्वामी ने छाती खोली थी।
'लो गोलियां चलाओ , आओ!' निडर सिंह-सम बोली थी।
पीछे उमड़ चली जनता भी ले उर में उत्साह अमंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
स्वतंत्रता-आंदोलन की दृढ़ता से बागडोर थामी।
जीवन-भर हिन्दू-मुस्लिम की, रहे एकता के हामी।
दिल्ली जामा मस्जिद की मिम्बर से यह बोले स्वामी।
शासन ब्रिटिश खत्म करने में रखो नहीं कोई खामी।
देश स्वतंत्र करो सब मिलकर, काटो अधम दासता फंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
हिंदी भाषा के प्रति जनगण-हृदय स्नेह संचार किया।
तन, मन, धन से दुखिया, दीनों, दलितों का उद्धार किया।
छुआछूत और जाति-पाति के विरुद्ध प्रबल प्रचार किया।
कर लाखों को शुद्ध देशहित पैदा उर में प्यार किया।
बना गए कितनों को ही वे योग्य स्वावलम्बी स्वच्छंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।
दुष्टों ने तब संत हनन को हत्यारा तैयार किया।
आया जब वह ''आने दो'' यह कह स्वामी ने बुला लिया।
पानी माँगा सेवक से, पिस्तौल अचानक दाग दिया।
पानी से नहिं प्यास बुझती तो संत-हृदय का रक्त पिया।
विदा हुए जग से स्वामी जी, वे जपकर ओ३म सच्चिदानंद।
धन्य-धन्य वे अमर हुतात्मा निर्भय स्वामी श्रद्धानन्द।

●●●

आर्य समाज हापुड़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज हापुड़ में दिनांक २४ दिसम्बर, २०२३ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर नगर के अनेक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के बीच वैदिक प्रश्नोत्तरी एवं वाक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेता बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

डॉ. जे.पी. शर्मा एवं श्री आनन्द प्रकाश शर्मा संरक्षक आर्य समाज हापुड़ आदि ने अपने विचार रखे। स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन के कारण ही आज हिन्दू जाति बची है। उनका ऋण सदैव हम पर रहेगा।

कार्यक्रम में सर्वश्री पवन आर्य जी प्रधान, संदीप आर्य जी मंत्री, चमन सिंह सिसौदिया जी, नरेन्द्र आर्य जी, सुरेन्द्र कवाड़ी, सुरेश सिंघल, सुरजीत सिंह, संजय शर्मा सर्व श्रीमती पुष्पा आर्या निधि आर्या माया आर्या, शशि सिंघल, रीना गुप्ता आदि उपस्थित थे।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।